भूगोल (वैकल्पिक विषय)

(मॉड्यूल-V)

(भौतिक विन्यास, संसाधन एवं कृषि)

DTVF/18–OPS–G5

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): सुनिल कुमार धनवन्ता

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 05 / 31 July, 2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]:

परीक्षा का माध्यम (Medium of Exam.): हिन्दी

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature):

नोट: प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश अंतिम पृष्ठ पर संलग्न है।

Evaluation Analysis

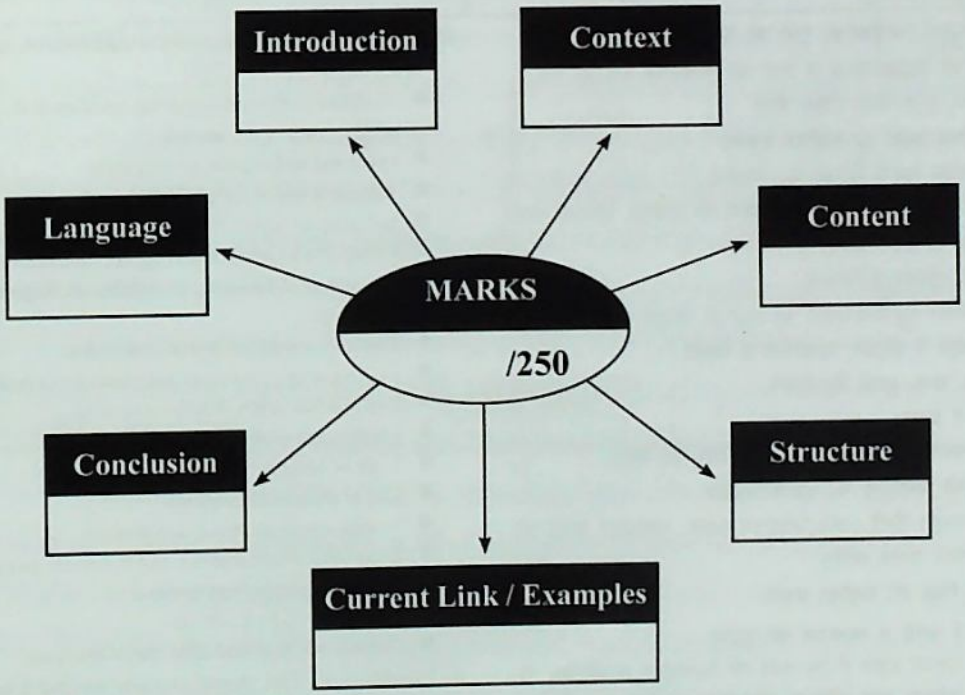

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Evaluator (Code & Signatures)

पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर)
Reviewer (Code & Signatures)

A3

सुनिल कुमार धानवता (Tests)

दृष्टि The Vision

भारत

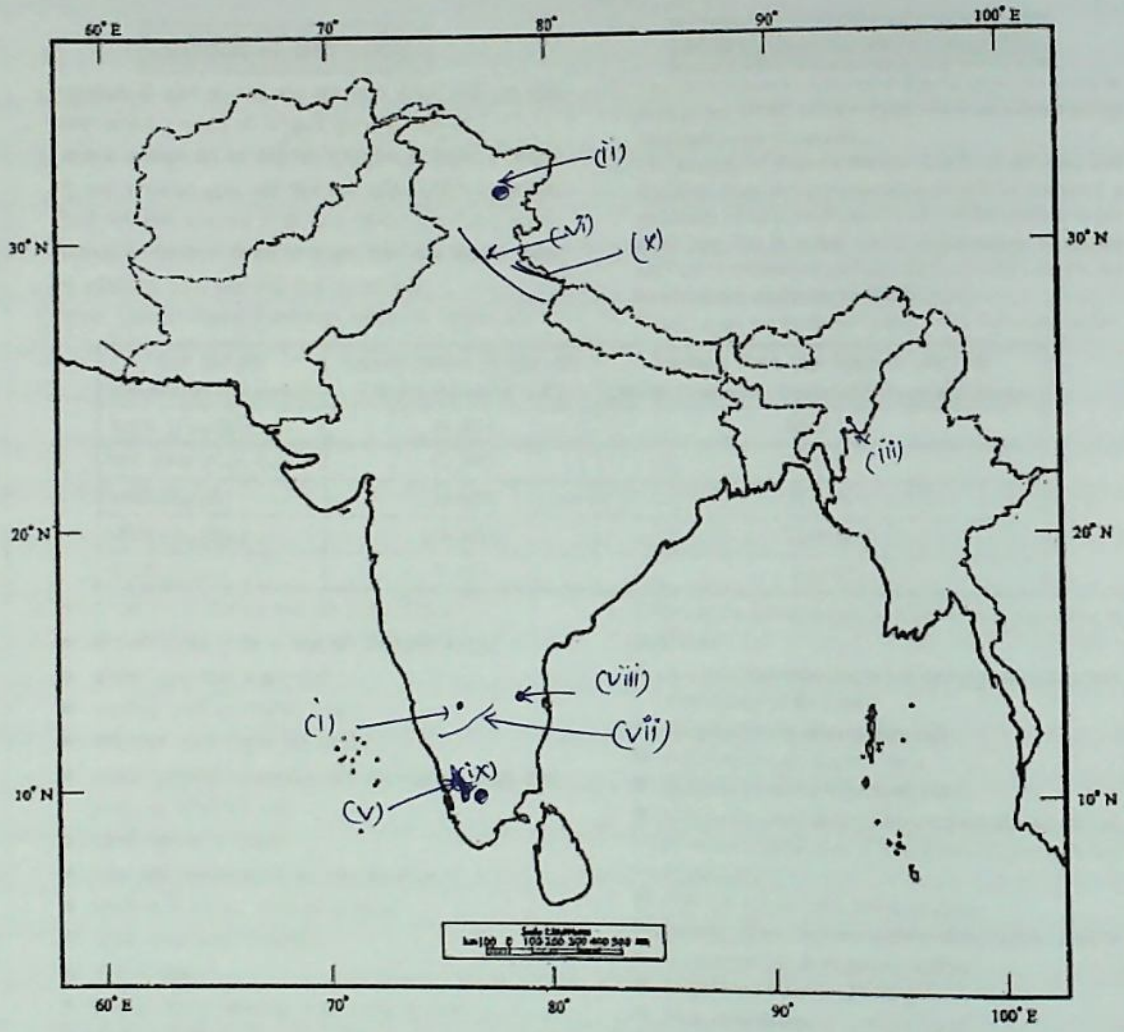

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

खण्ड - क / SECTION – A

1. (a) आपको दिये गए भारत के रेखामानचित्र पर निम्नलिखित सभी की स्थिति को अंकित कीजिये। अपनी क्यू.सी.ए. पुस्तिका में इन स्थानों में से प्रत्येक का भौतिक/वाणिज्यिक/आर्थिक/पारिस्थितिक/पर्यावरणीय/सांस्कृतिक महत्त्व अधिकतम 30 शब्दों में लिखिये: $2 \times 10 = 20$

On the outline map of India provided to you, mark the location of all of the following. Write in your QCA booklet the significance of these locations, whether physical/commercial/economic/ecological/environmental/cultural in not more than 30 words for each entry: $2 \times 10 = 20$

(i) चित्रदुर्ग

Chitradurga

यह कर्नाटक राज्य में स्थित एक प्रसिद्ध स्थान है। यहाँ लौह अयस्क की प्रचुर मात्रा पायी जाती है। साथ ही मैंगनीज, बॉक्साइट इत्यादि भी पाए जाते है

(ii) त्सो ल्हामो झील

Tso Lhamo lake

यह ~~का~~ जम्मू-कश्मीर राज्य के लद्दाख क्षेत्र में स्थित एक मीठे पानी की झील है। यह झील वर्ष के अधिकतर समय में जमी रहती है परन्तु बकी समय यह पेयजल का मुख्य स्रोत है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

(iii) मोरान

Moran

यह मणिपुर राज्य में स्थित है। यहाँ से एक रोड निकाला गया है जो भारत को म्यांमार के साथ द. पू. एशिया से जोड़ता है तथा भारत की एक्ट ईस्ट नीति को मजबूती प्रदान करता है।

(iv) करवार

Karwar

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(v) शोला वन क्षेत्र

Shola forest areas

दक्षिणी भारत में नीलगिरि क्षेत्र में पाये जाने वाले शीतोष्ण कटिबन्धीय वनों को कर्नाटक में शोला वन के नाम से पुकारा जाता है। इसमें मुख्य रूप से रबर, ~~सागवान~~, चीड़, स्प्रूस, देवदार इत्यादि वृक्ष आते हैं।

(vi) धौलाधर श्रेणी

Dhauladhar range

यह पश्चिमी हिमालय में स्थित एक पर्वत श्रेणी है। जिसका विस्तार हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, जम्मू में पाया जाता है। इसको मध्य हिमालय का भाग माना जाता है तथा इसमें अनेक महत्वपूर्ण दर्रे स्थित है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(vii) शारदा नदी

Sharda river

यह नदी कर्नाटक राज्य में स्थित है तथा

~~क्षेत्र~~

(viii) कोडाइकनाल झील

Kodaikanal lake

यह झील तमिलनाडु में स्थित है। यह मत्स्य उत्पादन एवं अपनी जैव विविधता की सम्पन्नता के लिए काफी प्रसिद्ध है। इसको हाल ही में जैव विरासत घोषित किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ix) अगस्त्यमलाई बायोस्फीयर रिज़र्व

Agasthyamalai biosphere reserve

यह बायोस्फीयर रिजर्व दक्षिण भारत में स्थित है मुख्य रूप से तमिलनाडु, कर्नाटक एवं केरल राज्यों में विस्तृत है इसमें नीलगाय, नीलगिरी लाहर, गोल्डन टेल्ड लंगूर इत्यादि जन्तु पाएँ जाते हैं

(x) गढ़वाल श्रेणी

Garhwal range

यह उत्तराखण्ड राज्य में स्थित एक पर्वत श्रेणी है। इस श्रेणी को ~~हिमालय~~ मध्य हिमालय का भाग माना जाता है यहाँ से ही गंगा व यमुना जैसी नदियों का उद्गम होता है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) धारवाड़ समूह की शैल संरचना एवं वितरण का संक्षिप्त विवरण दीजिये। 10

Give a brief account of rock structure and distribution of Dharwar rock system. 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

धारवाड़ की चट्टानों का निर्माण आर्कियन चट्टानों के अवसादों के निक्षेप के परिणामस्वरूप हुआ था।

चट्टानों की विशेषताएं

(i) मुख्य चट्टानों में शेल, शिष्ट, स्लेट इत्यादि हैं
(ii) इनका भारी मात्रा में कायान्तरण हुआ है
(iii) इनमें कई चट्टानों का अपक्षय भी काफी मात्रा में हुआ है जैसे अरावली
(iv) इनमें धात्विक एवं अधात्विक खनिजों की प्रचुर मात्रा पाई जाती है जिनमें लौह, मैंगनीज, बॉक्साइट, ग्रेनाइट, सोपस्टोन इत्यादि प्रमुख हैं।
(v) इनमें जीवाश्मों का अभाव है क्योंकि उस समय जीवों की उत्पत्ति नहीं हुई थी

ये चट्टानें मुख्य रूप से कर्नाटक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राज्य के धारवाड़ क्षेत्र में पायी जाती है अतः इसका नाम इसी कारण धारवाड़ क्रम हो गया।

इसके अलावा ये आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान तथा कुछ भागों में हिमालयी प्रदेशों में भी पायी जाती है।

अनेक खनिजों के भण्डारों के कारण इन चट्टानों का अत्यन्त आर्थिक महत्व है। अतः धारवाड़ क्रम की चट्टानें भारत की भूवैज्ञानिक संरचना में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) निर्वाह कृषि का परिचय देते हुए भारत में निर्वाह कृषि को बल देने वाले कारकों की चर्चा करें। 10

Write a note on subsistence agriculture and discuss the factors that promote it in India. 10

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जो कृषि कृषकों द्वारा अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए की जाती है, निर्वाह कृषि कहलाती है

निर्वाह कृषि की विशेषताएं

(i) ~~खाद्य~~ परिवार की खाद्यान्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए मुख्य रूप से खाद्यान्न फसलों की प्रधानता जिसमें चावल, गेहूं, बाजरा इत्यादि प्रमुख है

(ii) इन खेतों में परिवार के लोगों द्वारा ही श्रम का कार्य किया जाता है

(iii) खेती के साथ पशुपालन का कार्य भी होता है

(iv) तकनीकी व मशीनीकरण का निम्न स्तर होता है

भारत में इस प्रकार की कृषि अधिकांश भागों में की जाती है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिसके पीछे निम्न कारक उत्तरदायी है -

(क) अत्यधिक सघन जनसंख्या - इसके फलस्वरूप अत्यधिक मात्रा में खाद्यान्न की आवश्यकता होती है। परन्तु भूमि की कम उपलब्धता के कारण कम जमीन पर गहन कृषि की जाती है।

(ख) जोतों के छोटे आकार के कारण वाणिज्यिक कृषि करना कठिन

(ग) तकनीकी व मशीनीकरण के निम्न स्तर के कारण

(घ) सिंचाई का निम्न स्तर व संस्थागत स्रोतों का अभाव

इस प्रकार भारत में निर्वाह कृषि के पीछे अनेक आर्थिक, सामाजिक व तकनीकी कारक जिम्मेदार है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(d) जलसंभर क्षेत्र से आप क्या समझते हैं? यह संपोषणीय विकास में किस प्रकार महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है? 10

What do you mean by watershed region? How it does play a crucial role in sustainable development? 10

जब जल एक विस्तृत क्षेत्र से बहता एक बिन्दु की ओर गमन करता है तो उस संपूर्ण क्षेत्र को जलसंभर की संज्ञा दी जाती है।

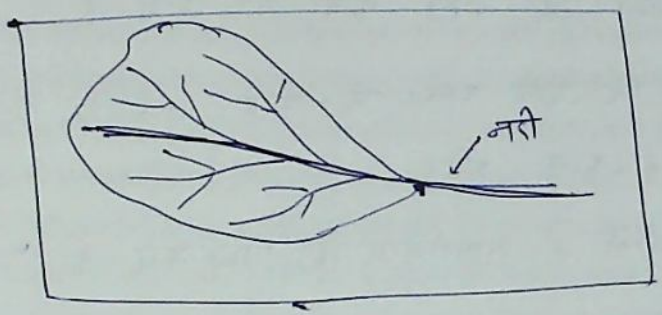

चित्र: जलसंभर

इसमें एक नदी एवं उसकी अनेक नदियों के द्वारा संपूर्ण क्षेत्र का जल प्रवाहित होता है। यहाँ या किसी और स्थान से पानी का आगमन नहीं होता।

जलसंभर के विकास के अंतर्गत सिंचाई व्यवस्था सुधार, वनारोपण, सड़क तंत्र का विकास, पारिस्थितिकी सुधार, रोजगार प्रबन्धन, बाढ़ प्रबन्धन, जल संसाधन की उपलब्धता एवं उनका समुचित प्रबंधन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इत्यादि पर बल दिया जाता है। जलसंभर क्षेत्र के विकास के निम्न प्रभाव होते हैं-

(i) उस क्षेत्र में वनारोपण एवं पारिस्थितिकी प्रबन्धन के कारण वर्षा की मात्रा में वृद्धि होती है जिससे पारिस्थितिकी संतुलन कायम रहता है एवं कृषि विकास होता है

(ii) सिंचाई के साधनों का विकास - कृषि क्षेत्र के विकास में सिंचाई की निर्णायक भूमिका होती है मानसून के कमजोर होने पर इसका महत्व बढ़ जाता है

(iii) इसी के साथ इसमें समुदाय की भागीदारी व रोजगार सृजन पर भी बल दिया जाता है

इस प्रकार जलसंभर विकास कार्यक्रम के द्वारा क्षेत्र का सामाजिक, आर्थिक, पारिस्थितिकीय इत्यादि क्षेत्रों में बहुआयामी विकास किया जाता है जो संसाधनों के बुद्धिमतापूर्ण उपयोग के साथ-साथ ~~संपोषणीय~~ संपोषणीय विकास सुनिश्चित होता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (a) उष्णकटिबंधीय चक्रवात के अत्यधिक विनाशकारी होने के कारणों का वर्णन करते हुए भारत में हाल में आए चक्रवातों के विशेष संदर्भ में चर्चा करें। 15

Discuss the reasons of tropical cyclones being highly destructive, with specific reference to the recently occurred tropical cyclones in India. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

केन्द्र में उपस्थित निम्नदाब की ओर परिधी से हवाओं का अभिसरण चक्रवात कहलाता है उष्ण कटिबन्धों में अनेक कारकों के फलस्वरूप उष्ण कटिबन्धीय चक्रवातों का निर्माण होता है

उष्ण कटिबंधीय चक्रवात सागर की सतह पर उत्पन्न होकर स्थल की ओर गमन करते हैं तथा वहाँ पर भारी विनाश को जन्म देते हैं इनके विनाशकारी होने के पीछे मुख्य कारण निम्नलिखित होते हैं

इनमें हवाओं की गति सामान्यतः 120-150 कि.मी./घंटा होती है जो कभी 400 कि.मी./घंटा हो सकती है इस तेज गति की हवाओं के समक्ष आने वाली समस्त संरचनाएँ नष्ट हो जाती हैं इससे वृक्षों, ईमारतों, ट्रांसमिशन लाईनों को भारी मात्रा में क्षति पहुँचती है।

हाल ही में आए ओखी चक्रवात ने भारत के विभिन्न भागों में काफी जानमाल

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के नुकसान को जन्म दिया है।

उष्ण कटिबन्धीय चक्रवात अत्यधिक कम समय में मूसलाधार वर्षा करते हैं जिससे स्थलीय भागों में बाढ़ की समस्या का सामना करना पड़ता है इसके फलस्वरूप किसानों की खेती नष्ट हो जाती है साथ ही पशु-पक्षियों व मनुष्यों के बाढ़ के चपेट में आने से इनको भारी मात्रा में नुकसान उठाना पड़ता है।

हाल ही में भारत के ~~पश्चिमी~~ पूर्वी तटीय भागों में रोनू चक्रवात का सामना किया गया जिसके भारत के तमिलनाडु, उड़ीसा, आँध्रप्रदेश इत्यादि में भारी विनाश हुआ।

इसी के साथ इनकी विशालता एवं विनाशकता का सटीक अनुमान लगाना मुश्किल होता है हालांकि वर्तमान में इस संबन्ध में अनेक उन्नत प्रौद्योगिकियों का विकास कर लिया गया है परन्तु

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सतीकता एवं शुद्धता के अभाव के कारण विनाशकता का अनुमान कठिन होता है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि अपने आकार, वर्षा की भयंकर मात्रा व हवाओं की तीव्र गति के कारण ये तटीय भागों में विनाशकारी प्रभावों को जन्म देते हैं जिसके बचने के लिए आपदा प्रबन्धन की उचित रणनीति का होना आवश्यक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
Please do not write anything except the question number in this space)

(b) भारतीय मृदा का वर्गीकरण प्रस्तुत करते हुए लैटेराइट मृदा के वितरण व कृषि कार्यों में इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिये। 15

Give a brief account of classification of Indian soil and highlight the distribution of laterite soil and its utility in agricultural practices. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~भारतीय कृषि अनुसंधान~~

अखिल भारतीय भूमि उपयोग एवं मृदा सर्वेक्षण ने उच्चावच, मृदा के उपजाऊपन, संरचना व परिच्छेदिका की प्रकृति के आधार पर अनेक प्रकारों में भारतीय मृदा को वर्गीकृत किया है

(i) जलोढ़ मृदा
(ii) लाल मिट्टी
(iii) काली मिट्टी
(iv) लेटेराइट मृदा
(v) मरुस्थलीय मृदा
(vi) लवणीय एवं क्षारीय मृदा
(vii) पर्वतीय एवं वनीय मृदा
(viii) पीट या दलदली मृदा

इनमें से लेटेराइट मृदा का विकास उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्रों के आर्द्र वर्षा वाले क्षेत्रों में होता है। अधिक वर्षा के कारण निक्षालन के परिणामस्वरूप इसमें ह्यूमस, फास्फोरस, नाइट्रोजन, लौह इत्यादि की कमी पायी जाती है यह मिट्टी ईंट

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की तरह कठोर होती है

इन मिट्टी का विस्तार मुख्य रूप से पश्चिमी घाट के पश्चिमी भाग, उत्तरी-पूर्वी राज्यों में मुख्य रूप से पाया जाता है इन भागों में वर्षा की मात्रा सामान्यतः 200 सेमी. से अधिक होता है

लेटेराइट मृदा में कृषि हेतु आवश्यक ह्यूमस पोटाश, लोहा, सिलिका इत्यादि का अभाव होता है अतः यह मृदा अपेक्षाकृत कम उपजाऊ होती

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। इसलिए इसका निर्माण भवन निर्माण हेतु ईंटों के निर्माण हेतु किया जाता है।

परन्तु इसी के साथ ही इस मृदा में काजू, ज्वार, बाजरा, रागी, मूंगफली इत्यादि की खेती की जाती है।

अतः कहा जा सकता है कि लेटेराइट मृदा अपनी विशेषताओं के कारण कृषि कार्यों हेतु ज्यादा उपयोगी नहीं है परन्तु इस पर अनेक फसलों व सब्जियों की खेती की जाती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) भारत में नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों के विकास की संभावनाओं पर चर्चा करें। 20
Discuss the potential of development of renewable energy resources in India. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जिन ऊर्जा संसाधनों को उपयोग के पश्चात नवीनीकृत किया जा सके उन्हें नवीकरणीय ऊर्जा संसाधन कहते हैं। जीवाश्म ईंधनों की समाप्य प्रकृति के कारण नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों का विकास अनिवार्य हो गया है।

भारत में नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों के संदर्भ में पर्याप्त संभावनाएँ मौजूद हैं जिसमें सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, जल विद्युत ऊर्जा, नाभिकीय ऊर्जा, तरंगीय ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा इत्यादि मुख्य हैं।

भारत उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में तथा शीतोष्ण कटिबंधीय क्षेत्र में स्थित है अतः वर्ष के अधिकांश दिनों यहाँ सूर्यातप की पर्याप्त मात्रा उपलब्ध होती है जिसका प्रयोग सौर ऊर्जा के उत्पादन में किया जा सकता है। भारत में अनेक राज्यों जैसे राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक, ~~तमिलनाडु~~

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तमिलनाडु इत्यादि में सौर ऊर्जा उत्पादन की पर्याप्त संभावनाएँ मौजूद हैं।

इसी प्रकार भारत में वर्ष भर चलने वाली प्रचलित पवनों से पवन ऊर्जा प्राप्त करने की भी काफी संभावनाएँ हैं। उच्च पर्वतीय क्षेत्रों एवं तटीय क्षेत्रों में इनके उत्पादन की असीम संभावनाएँ मौजूद हैं।

भारत में हिमालयी एवं प्रायद्वीपीय नदियों के विशाल अपवाह तंत्र के कारण जल विद्युत की काफी संभावनाएँ हैं।

भारत में नाभिकीय ऊर्जा उत्पादन अपने विकास के प्रारंभिक चरण में है लेकिन मोनाजाइट (थोरियम) के प्रयोग की प्रौद्योगिकी विकसित कर अत्यधिक मात्रा में नाभिकीय ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है।

भारत की 7515 km लम्बी तट रेखा के सहारे तरंगीय ऊर्जा एवं ज्वारीय ऊर्जा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की काफी संभावनाएँ है। वर्तमान में खंभात की खाड़ी जैसे स्थान पर ज्वारीय ऊर्जा का उत्पादन किया जा रहा है परन्तु यह अपनी संभावित क्षमता से काफी कम है।

भारत में नवीनीकरणीय ऊर्जा के विकास के समक्ष चुनौतियाँ-

(i) उच्च क्षमता की प्रौद्योगिकी का अभाव
(ii) शोध व अनुसंधान का अभाव
(iii) कुशल मानव संसाधन का अभाव
(iv) परंपरागत ऊर्जा स्रोतों से प्राप्त ऊर्जा का सस्ता होना

स्पष्ट है कि भारत में नवीकरणीय ऊर्जा उत्पादन की पर्याप्त संभावनाएं मौजूद है परन्तु अनेक चुनौतियों के कारण इसमें रुकावटें आ रही है जिनका निवारण आवश्यक है तभी भारत का ऊर्जा भविष्य सुरक्षित होगा।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (a) हिमालय केवल एक प्राकृतिक रोधक ही नहीं बल्कि जलवायु, अपवाह व सांस्कृतिक विभाजक भी है। व्याख्या कीजिये। 15

The Himalayas are not just a natural barrier but also a climatic, drainage and cultural divider. Explain. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिमालय पर्वत एक चापीय आकार में पश्चिम से पूर्वी दिशा में भारत के उत्तरी भाग में विस्तृत है। हिमालय पर्वत अपने आकार, अवस्थिति के कारण भारत की जलवायु, अपवाह एवं संस्कृति को अत्यधिक प्रभावित करता है

हिमालय पर्वत अपनी ऊँचाई के द्वारा उत्तरी एशिया से भारत की ओर आने वाली शीत लहरों को रोकता है जिससे इसके उत्तरी भागों में शीत जलवायु जबकि दक्षिण भागों अर्थात् दक्षिणी एशिया में उष्ण जलवायु पायी जाती है।

इसी के साथ मानसूनी पवनों के समक्ष अवरोधक का कार्य करके भी वर्षा के वितरण को विभाजित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हिमालय के उत्तरी भाग अपेक्षाकृत शुष्क जबकि दक्षिणी भाग आर्द्र पाये जाते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिमालय पर्वत नदियों के बेसिनों के विभाजन में भी अपनी भूमिका निभाता है। उत्तरी भाग में यह तिब्बत एवं उत्तर भारत की नदियों के अपवाह के विभाजन का कार्य करता है जबकि पूर्वोत्तर भारत में म्यांमार एवं उत्तर-पूर्वी भारत की नदियों के मध्य जलविभाजक का कार्य करता है

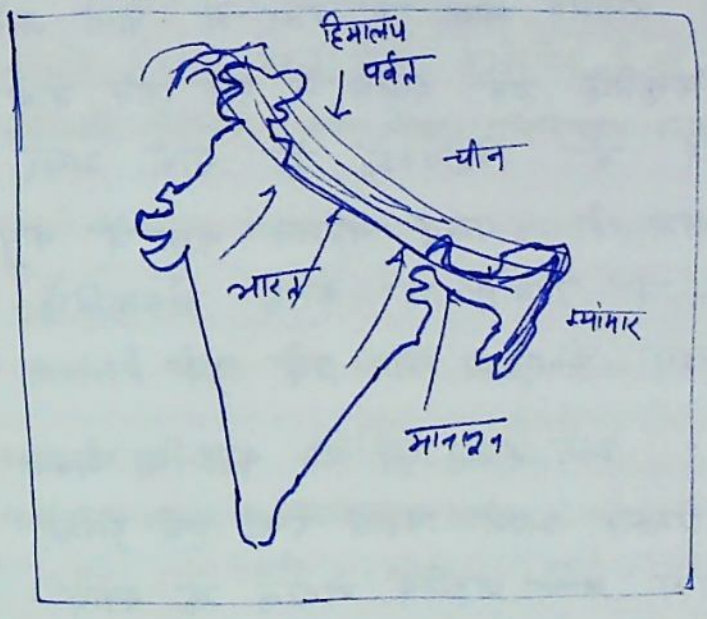

प्राचीन काल से हिमालय पर्वत अपनी दुर्गम ऊँचाई के कारण लोगों के आवागमन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को सीमित करने में सफल रहा है। इसे केवल कुछ दर्रों के माध्यम से ही पार किया जा सकता है जो भी शीतकाल में बर्फबारी के कारण बन्द हो जाते हैं। लोगों के सीमित आवागमन एवं अन्तर्क्रिया के कारण उनकी संस्कृतियों का आपसी सम्मिश्रण नहीं हो सका।

इसलिए हिमालय के उत्तर में पायी जाने वाली संस्कृतियों एवं दक्षिण में पायी जाने वाली संस्कृतियों की विशेषताओं में काफी अन्तर पाया जाता है परन्तु वर्तमान काल में वायु परिवहन के विकास के कारण संस्कृतियों के मध्य अन्तर्क्रिया में वृद्धि हुई है।

अतः स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है हिमालय अपनी विशाल ऊँचाई एवं दुर्गमता के कारण प्राकृतिक रोधक के साथ-साथ जलवायु, अपवाह एवं सांस्कृतिक विभाजक की भूमिका भी निभा रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) 'वन्य जीवन संरक्षण, स्थानीय समुदायों को शामिल किये बिना केवल सरकारी नीतियों की बदौलत संभव नहीं है।' चर्चा करें। 15

"Wildlife conservation just with government policies and without involving the local communities is not possible." Discuss. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

वर्तमान काल में वन्य जीवों के समक्ष अस्तित्व का संकट मंडरा रहा है जिसके पीछे उनके आवासों का विनाश, अवैध शिकार व तस्करी, जलवायु परिवर्तन, भूमि उपयोग में परिवर्तन इत्यादि कारक उत्तरदायी हैं।

वन्य जीव संरक्षण की दो विधियाँ हैं-

(क) स्वस्थाने संरक्षण - राष्ट्रीय उद्यान, बायोस्फीयर रिजर्व इत्यादि

(ख) बहिस्थाने संरक्षण - जीन बैंक, चिड़ियाघर इत्यादि

भारत सरकार ने समय-समय पर वन्य जीवों के संरक्षण के लिए अनेक कानूनों एवं नीतियों का निर्माण किया है जिसमें मुख्य है-

(क) वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972

(ख) पर्यावरण सुरक्षा अधिनियम, 1986

(ग) राष्ट्रीय वन नीति, 1988

(घ) जैवविविधता संरक्षण अधिनियम, 2002 इत्यादि

उपर्युक्त नीतियों के फलस्वरूप अनेक वन्य जीवों को संरक्षित करने में पर्याप्त सफलता

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हासिल हुई है परन्तु इन नीतियों में अनेक समस्याएं व्याप्त हैं-

(क) जमीनी स्तर पर कार्यान्वयन के स्तर का निम्न होना

(ख) अनेक विभागों के मध्य समन्वय का अभाव

(ग) स्थानीय समुदाय को शामिल किए बिना नीतियों का निर्माण व क्रियान्वयन

अतः वन्य जीव संरक्षण में स्थानीय समुदाय को शामिल करना आवश्यक है ताकि उनके पंरपरागत ज्ञान का इस्तेमाल करके नीतियों का सटीक कार्यान्वयन संभव हो सके।

स्थानीय समुदाय अपने आस-पास के वातावरण, वहाँ पर निवास कर रहे जीव-जन्तुओं की प्रकृति एवं स्वभाव को बेहतर तरीके से जानते हैं। इसलिए उनके इस अनुभव को इन जीव-जन्तुओं के संरक्षण संबन्धी नीतियों में पर्याप्त स्थान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिया जाना चाहिए।

भारत में वनों में पायी जाने वाली अनेक जनजातियों के पास इन जीवों के संरक्षण का प्राचीन ज्ञान उपलब्ध है तथा ये इन जीवों को अपने जीवन का अभिन्न अंग मानते हैं।

इस प्रकार वन्य जीव संरक्षण की नीतियों के सफल कार्यान्वयन के लिए स्थानीय समुदायों के साथ सहयोग का होना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) भारत की औद्योगिक अर्थव्यवस्था पर उदारीकरण के प्रभावों की चर्चा कीजिये। 20
Discuss the impacts of liberalisation on India's industrial economy. 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

1956 की औद्योगिक नीति में सार्वजनिक क्षेत्र को निर्णायक स्थान दिया गया तथा कालान्तर में लाइसेंस - परमिट - इंस्पेक्टर राज के माध्यम से अर्थव्यवस्था को संचालित करने का प्रयास किया।

सन 1991 से पहले भारत की अर्थव्यवस्था का स्वरूप बन्द अर्थव्यवस्था का था जहाँ पर व्यवसाय प्रारंभ करने के लिए कठोर विनियमों का प्रावधान था। इसी कारण 1991 से पूर्व भारत की अर्थव्यवस्था को अनेक संकटों का सामना करना पड़ा।

इन्हीं संकटों के निवारण के लिए 1991 में उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण की नीति के साथ नई औद्योगिक नीति का निर्माण किया गया। तभी से भारतीय अर्थव्यवस्था इन बदलावों के परिणामस्वरूप काफी बदल चुकी है।

उदारीकरण के दौरान निम्न सुधार किए गए -

(i) सार्वजनिक क्षेत्र हेतु आरक्षित उद्योगों की संख्या को 17 से घटाकर 6 कर दिया गया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ii) कुछ उद्योगों को छोड़कर उद्योग स्थापित करते समय लाइसेंस की अनिवार्यता को समाप्त कर दिया गया

(iii) फेमा (FEMA) कानून लाया गया

(iv) विदेशी निवेश को मान्यता

इन्ही सुधारों के निम्न सकारात्मक प्रभाव हुए -

भारत में उद्योग स्थापित करना आसान हो गया जिस कारण भारत की कारोबारी माहौल में सकारात्मकता का समावेशन हुआ। वर्तमान में भारत ईज ऑफ डूईंग बिजनेस के मामले में शीर्ष 100 देशों में शामिल है।

उद्योगों पर से विनियमों की समाप्ति से औद्योगिक संवृद्धि में सकारात्मक वृद्धि हुई।

भारत की GDP एवं प्रति व्यक्ति आय में भी काफी वृद्धि हुई है।

इसी के साथ भारत वर्तमान में विश्व की 6 वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उदारीकरण के नकारात्मक प्रभाव -

(i) क्षेत्रीय असंतुलन में वृद्धि क्योंकि औद्योगिक विकास का फायदा कुछ क्षेत्रों को ही मिल पाया

(ii) आय की असमानता में वृद्धि

(iii) कृषि की उपेक्षा

(iv) रोजगार की निम्न दर

इस प्रकार स्पष्ट है कि उदारीकरण ने भारत को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों तरीकों से प्रभावित किया है। अतः हमें इस संबन्ध में उत्पन्न समस्याओं के तत्काल निवारण के कदम उठाने चाहिए।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

खण्ड - ख / SECTION - B

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

5. निम्नलिखित प्रत्येक का लगभग 150 शब्दों में उत्तर दीजिये: $10 \times 5 = 50$
Answer the following in about 150 words each:

(a) ट्रिवार्था के वर्गीकरण पर आधारित भारत में 'शुष्क जलवायु समूह' पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।

Write a short note on tropical climate of India based on Trewartha's classification.

ट्रिवार्था ने कोपेन के वर्गीकरण में संशोधन करते हुए भारत को 7 जलवायु प्रदेशों में विभाजित किया।

ट्रिवार्था ने शुष्क जलवायु को 'B' अक्षर से संबोधित किया तथा इसको आगे शुष्कता एवं तापमान के आधार पर आगे विभाजित किया

- B
  - BWh
  - BWk – भारत में उपलब्ध नहीं
  - BSh
  - BSk – भारत में उपलब्ध नहीं

BWh: इसे शुष्क मरुस्थलीय जलवायु भी कहा जाता है यहाँ वर्ष में अधिकतम तापमान 45°C के अधिक और वर्षा 25 सेमी के कम होता है इस क्षेत्र का विस्तार राजस्थान के पश्चिमी भाग में मुख्य रूप से है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Bsh- इसे अर्ध-मरुस्थलीय जलवायु की संज्ञा दी जाती है। यहाँ वर्षा शुष्क भागों से ज्यादा होती है जो सामान्यतः 50-75 cm हो जाती है यहाँ पर बाजरे, ज्वार, जौ, रागी इत्यादि की खेती की जाती है।

इस जलवायु वर्ग का विस्तार मुख्य रूप से राजस्थान के अरावली के पूर्वी भागों में, हरियाणा के द.प. भागों में, ~~पश्चिमी~~ व कुछ भागा में प्रायद्वीपीय भागों में भी पाया जाता है

इस प्रकार यह जलवायु भारत में शुष्क क्षेत्रों की विशेषताओं को प्रदर्शित करती है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) हरित क्रांति ने भारतीय मृदा की उर्वरा-शक्ति को प्रभावित किया है। टिप्पणी करें।

Green revolution has impacted the fertility of Indian soil. Comment.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कृषि में उन्नत बीजों के प्रयोग के कारण कृषि उत्पादन में अचानक तीव्र वृद्धि को हरित क्रान्ति की संज्ञा दी जाती है।

हरित क्रान्ति ने जहाँ एक ओर मानव को खाद्यान्न संकट से बचाया है वहीं दूसरी ओर इसने मृदा की उर्वरा-शक्ति को काफी नकारात्मक रूप में प्रभावित किया है।

(क) रासायनिक उर्वरकों के अत्यधिक एवं असंतुलित प्रयोग के कारण मृदा के जैविक गुणों की हानि हुई है जिससे मृदा की उत्पादकता में कमी आयी है। एक अध्ययन के अनुसार सामने आया है कि पंजाब और हरियाणा में इसके कारण मृदा की उपजाऊ शक्ति इतनी कम हो गई है कि अगले वर्ष समान मात्रा में उत्पादन प्राप्त करने के लिए प्रति हेक्टेयर 10 कि.ग्रा. उर्वरक अतिरिक्त डालना पड़ेगा।

(ख) सिंचाई की सुविधा के विकास के कारण

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अत्यधिक बाढ़ सिंचाई के कारण केशिकाक्रिया के फलस्वरूप जमीन में उपस्थित लवण सतह पर आ गए हैं जिसके जमीन ऊसर भूमि में बदल रही है। पंजाब व हरियाणा में ऐसी भूमि को रेह एवं कल्लर नाम से संबोधित किया जाता है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि हरित क्रान्ति ने मृदा की उत्पादकता व उर्वरता को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है जिसके समाधान के लिए जैविक उर्वरकों, ड्रिप सिंचाई व फव्वारा सिंचाई इत्यादि का प्रयोग आवश्यक है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(c) फसल सघनता क्या है? भारत में इसके स्थानिक वितरण की कारणों सहित व्याख्या करें।

What is crop intensity? Discuss, with reasons, its spatial distribution in India.

~~निवल बोये गए क्षेत्र तथा~~ ~~सकल~~ बोये

सकल बोये गये क्षेत्र व निवल बोये गये क्षेत्र के अनुपात को फसल सघनता कहा जाता है।

फसलसघनता = $\left(\frac{\text{Gross cropped Area}}{\text{Net cropped Area}}\right)$

जैसे यदि एक 10 हेक्टेयर के खेत में वर्ष के आधे समय 10 हेक्टेयर पर तथा बाकी समय 5 हेक्टेयर पर कृषि की जाती है तो फसल सघनता — $\frac{10+5}{10} = \underline{150}\%$

स्थानिक वितरण

यह पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तरप्रदेश में सर्वाधिक पायी जाती है जबकि प्रायद्वीपीय भागों ~~व~~ में न्यूनतम पायी जाती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

वितरण के कारण-

(i) हरित क्रान्ति का प्रभाव

(ii) मशीनीकरण का स्तर व तकनीकी का विस्तार

(iii) कृषि के आगतों की उपलब्धता

(iv) सिंचाई की उपलब्धता

(v) मृदा का उपजाऊपन

(vi) वर्षा की मात्रा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(d) हिमालय के अपवाह तंत्र की विशेषताओं का वर्णन करते हुए अपवाह तंत्रों के कार्यिक महत्त्व को बताएँ।

Describe the salient features of Himalayan drainage system, and highlight the functional importance of drainage systems.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हिमालय ~~तंत्र~~ के अपवाह तंत्र की विशेषताएं

(i) युवावस्था में है।

(ii) सदानीरा नदियाँ - हिमनदों से जल प्राप्त

(iii) वृक्षाकार प्रतिरूप

(iv) अवसादों का भारी भाग में परिवहन

(v) मैदानी भागों में मार्ग परिवर्तन

प्रमुख नदी

→ गंगा नदी तंत्र

→ सिन्धु नदी तंत्र

→ ब्रह्मपुत्र नदी

→ कार्यात्मक महत्व:

(i) सिंचाई के लिए जल की उपलब्धता → कृषि विकास

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

→ पेयजल की उपलब्धता

→ जल परिवहन

→ बांध निर्माण के द्वारा जल विद्युत उत्पादन

→ संस्कृतियों का पोषण

→ पारिस्थितिकी संतुलन में योगदान

→ मिट्टी के उपजाऊपन में योगदान

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(e) भारत में कोयले के उत्पादन एवं वितरण का संक्षिप्त विवरण दें।

Give a brief account of production and distribution of coal in India.

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत में 98% कोयला गोंडवाना क्रम की चट्टानों में पाया जाता है।

उत्पादन

→ मुख्य रूप से बिटुमिनस कोयला

→ लिग्नाइट कोयला भी कुछ भागों में

→ सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों द्वारा उत्पादन

→ वितरण - मुख्य रूप से नदी द्रोणों की घाटियों में

→ उड़ीसा

→ झारखण्ड - बोकारो,

→ मध्यप्रदेश

→ छत्तीसगढ़

→ पश्चिम बंगाल - रानीगंज

→ तमिलनाडु - नेवेली में लिग्नाइट कोयला

→ टर्शियरी चट्टानें - हिमालय श्रेणी में (असम, अरुणाचल)

→ राजस्थान के बीकानेर में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

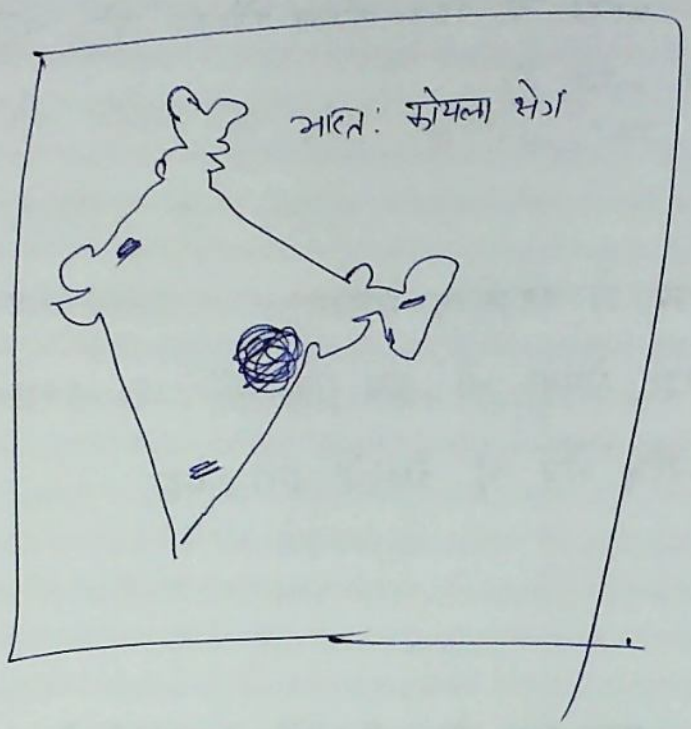

इस प्रकार भारत में कोयला छोटानागपुर क्षेत्र के पठार में मुख्यरूप से पाया जाता है जो भारत की ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this sp

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (a) अंतर्राज्यीय नदी जल विवाद के कारणों की जाँच करते हुए प्रस्तावित अंतर्राज्यीय नदी जल विवाद (संशोधन) विधेयक की प्रासंगिकता का परीक्षण करें। 15

Discuss the factors behind inter-state river water disputes and examine the utility of proposed Inter-state River Water Disputes (Amendment) Bill. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत में नदियाँ जब एक राज्य में प्रवाहित न होकर एक से अधिक राज्यों में प्रवाहित होती है तो नदी जल को प्राप्त करने के राज्यों के मध्य विवाद उत्पन्न हो जाता है।

प्रमुख नदी जल विवाद.

(i) कावेरी नदी जल विवाद
(ii) कृष्णा नदी जल विवाद
(iii) ~~सतलुज~~ सतलुज एवं यमुना नदी जल विवाद
(iv) माही नदी जल विवाद इत्यादि

इन ~~नदी~~ नदी जल विवादों के पीछे अनेक राजनीतिक, आर्थिक कारक जिम्मेदार हैं। राज्य अपने राज्य में सिंचाई, पेयजल इत्यादि के लिए अधिक जल प्राप्त करना चाहते हैं जिससे अभाव के समय विवाद की परिस्थिति उत्पन्न हो जाती है।

नदी जल के पर्याप्त आंकड़ों के अभाव के कारण इनसे संबन्धित विवादों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

के निपटारे में काफी समय लग जाता है।

इसी के साथ राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी, न्यायिक विलंबता इत्यादि के कारण नदी जल बंटवारे के विवाद के निपटान में वर्षों लग जाते हैं।

नदी जल विवाद के संबन्ध में भारतीय संविधान के अनुच्छेद 262 में संसद को इस संबन्ध में ~~xxx~~ कानून बनाने की शक्ति दी गई है। इसी शक्ति का प्रयोग करके संसद ने नदी जल विवाद अनिपटान अधिनियम, 1956 को पारित किया जिसका संशोधन करने के लिए एक नया विधेयक नदी जल विवाद (संशोधन) विधेयक लाया गया।

प्रमुख प्रावधान-

(i) एक स्थायी नदी जल विवाद न्यायाधिकरण का गठन
(ii) नदी बेसिनों के आंकड़ों का संग्रहण व रखरखाव
(iii) मध्यस्थता समिति के गठन का सुझाव

कृपया इस स्थ
कुछ न लिखें।
(Please don't
anything in th

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अधिनियम के लाभ-

(i) स्थाई न्यायाधिकरण की स्थापना के कारण विवाद निपटान में लगने वाले समय की कमी

(ii) आँकड़ों के समुचित संग्रह के कारण विवाद निपटाने में आसानी

(iii) मध्यस्थता समिति के कारण विवाद का न्यायाधिकरण में जाने से पहले निपटान संभव

चुनौतियाँ

(i) राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी

(ii) न्यायाधिकरण के निर्णयों की अस्वीकृति के कारण सुप्रीम कोर्ट में अपील → विलंब

इस प्रकार इस बिल के कारण नदी विवाद निपटान की काफी संभावनाएं जगी हैं परन्तु उपयुक्त राजनीतिक इच्छाशक्ति व जनसहयोग के बिना इसका क्रियान्वयन चुनौतिपूर्ण है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(b) कृषि अशांति से क्या अभिप्राय है? क्या कर्ज़माफी से इस समस्या का समाधान संभव है? 20

What is the meaning of 'agricultural unrest'? Can this problem be solved by loan-waivers? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें
(Please don't write anything in this space)

कृषि क्षेत्र में अनेक समस्याओं के कारण कृषकों के मध्य असंतोष व्याप्त है जिससे कृषि क्षेत्र बुरी तरह से प्रभावित हुआ है। कृषि क्षेत्र में व्याप्त इस अनिश्चितता एवं संकट की स्थिति को कृषि अशान्ति की संज्ञा दी जाती है।

कृषि अशान्ति के पीछे अनेक कारण जिम्मेदार है ~~[illegible]~~ जिनमें कृषि क्षेत्र की उत्पादकता, विपणन, ऋण व्यवस्था, सिंचाई व्यवस्था, भूमि सुधार इत्यादि क्षेत्र में व्याप्त प्रमुख समस्याएं है।

मानसून की अनिश्चितता एवं बारंबार सूखे के कारण हुए फसल नुकसान के कारण उत्पादन में कमी के कारण कृषक काफी संकट में है।

इसी के साथ उनको उपज के सही मूल्य ना मिलने, समय पर ऋण न मिलने व उच्च ब्याज दरें, भूमि सुधारों के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अप्रभावी क्रियान्वयन, भूमि अधिग्रहण के कारण कृषि क्षेत्र में भारी संकट व्याप्त है जिसने कृषकों के जीवन को संकटमयी बना दिया है। इसी कारण कृषकों की आत्महत्या के मामलों में तीव्र गति से वृद्धि हो रही है।

कृषि संकट व अशान्ति से निपटने के लिए अनेक राज्य सरकारों एवं केन्द्र सरकार ने किसानों की ~~अनेक~~ कर्जमाफी के लिए अनेक योजनाओं का क्रियान्वयन किया है

कर्जमाफी के सकारात्मक पक्ष-

(i) कृषकों को ऋण कुचक्र से मुक्ति
(ii) सूखे एवं बाढ़ के समय कृषकों की फसल नष्ट होने पर इससे राहत
(iii) किसान अपने धन का इस्तेमाल अब बीज, उर्वरक इत्यादि खरीदने में कर सकेगा।

नकारात्मक पक्ष-

(i) बैंकों के NPA में वृद्धि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ii) किसानों में ऋण चुकाने के संदर्भ में नकारात्मक भावना का समावेशन

(iii) ~~अधिक~~ इससे किसानों की समस्या का दीर्घकालीन समाधान नहीं

कर्जमाफी के द्वारा किसानों को अल्पकालीन राहत तो दी जा सकती है परन्तु अनेक विद्वानों का मानना है कि इस समस्या के दीर्घकालीन समाधान के लिए कृषि के बुनियादी कारकों जैसे सिंचाई, बीज, उर्वरक, उत्पादकता इत्यादि पर ध्यान देने की तत्काल आवश्यकता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(c) उत्तर-पूर्वी भारत का क्षेत्र पारिस्थितिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील है। जलवायु परिवर्तन के इस क्षेत्र की पारिस्थितिकी पर पड़ने वाले संभावित प्रभावों की चर्चा करें। 15

The North-East India is ecologically extremely sensitive. Discuss the possible impacts of climate change on the ecology of this region. 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत का उत्तरी पूर्वी भाग पारिस्थितिकी रूप से काफी समृद्ध प्रदेश है। यहां विविध प्रकार की वनस्पति, जीव-जन्तु तथा संस्कृतियाँ पायी जाती है। इसी को देखते हुए इस क्षेत्र को जैव विविधता समृद्ध क्षेत्र घोषित किया गया है।

यहाँ पर पाये जाने वाले वनों में सदाबहार वन, पर्णपाती वन इत्यादि प्रमुख है जबकि एक सींग का गैण्डा, बाघ, हाथी, बंगूर इत्यादि इस क्षेत्र के प्रमुख जीव है।

परन्तु ~~वर्तमान~~ विगत काल व वर्तमान में इनके समक्ष अस्तित्व का संकट मंडरा रहा है। इसके पीछे इन जीव जन्तुओं के आवासों का विनाश, झूम खेती, अवैध शिकार व तस्करी, संरक्षण के लिए जागरूकता का अभाव इत्यादि प्रमुख है। इसी संकट को देखते हुए कंजरवेशन इंटरनेशनल नामक संस्था ने इस क्षेत्र बायोडायवर्सिटी हॉट स्पॉट

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्था
कुछ न लिखें।
(Please don't w
anything in thi

घोषित किया है। इसी के साथ यहाँ अनेक बायोस्फीयर रिजर्व, राष्ट्रीय उद्यान, वन्य जीव अभयारण्य इत्यादि अवस्थित है।

जलवायु परिवर्तन ने इस क्षेत्र की पारिस्थितिकी के विनाश में निर्णायक भूमिका निभाई है।

जलवायु परिवर्तन के कारण तापमान वृद्धि के फलस्वरूप ~~वर्षा की कमी~~ अनेक जीवों के आवासों का विनाश हुआ है तथा ये जीव जन्तु एवं वनस्पति बदलती परिस्थितियों में अपने आप को ढालने में सफल नहीं हो पा रहे हैं। इसी कारण अनेक जीवों की प्रजातियाँ अपनी विलुप्ति के कगार पर खड़ी है।

अत्यधिक सूखे एवं बाढ़ के कारण भी अनेक जीवों के निवास स्थान का विनाश हुआ। वहीं जंगल की आग के कारण बड़ी मात्रा में वनों का विनाश हुआ है तथा इसी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के साथ अनेक जीव भी अपना अस्तित्व खो चुके हैं।

जलवायु परिवर्तन के कारण ~~जलवायु एवं~~ तापमान एवं वर्षा कटिबन्धों में परिवर्तन के कारण अनेक प्रवासी पक्षियों का अस्तित्व भी संकट है।

अतः स्पष्टतया कहा जा सकता है कि भारत के इस समृद्ध जैव विविधता क्षेत्र के समक्ष जलवायु परिवर्तन के अनेक नकारात्मक प्रभावों के कारण संकट मण्डरा रहा है जिसका तत्काल समाधान अनिवार्य है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

भूगोल (वैकल्पिक विषय)

(मॉड्यूल-V)

(भौतिक विन्यास, संसाधन एवं कृषि)

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time Allowed: Three Hours

अधिकतम अंक : 250
Maximum Marks : 250

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:

इसमें **आठ** प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा **हिन्दी एवं अंग्रेज़ी** भाषा में मुद्रित हैं।

परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

प्रश्न संख्या **1** और **5** **अनिवार्य** हैं तथा बाकी में से **प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न** चुनकर किन्हीं **तीन प्रश्नों** के उत्तर दीजिये।

प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।

प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर **कोई अंक नहीं** मिलेंगे।

प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।

जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।

प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशत: दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS** and printed both in **HINDI & ENGLISH**.*

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

Copyright – Drishti The Vision Foundation